रचना

आरम्भ में - समय की उत्पत्ति से भी पहले परमेश्वर था। तब उसने ही आकाश और पृथ्वी को रचा।
वह तीन व्यक्तित्व में समाहित हैं - सह-समकक्ष - सह-शाश्वत परन्तु जिनका सार मिलकर एक में पूर्णता पाता है।
परमेश्वर अकेला नहीं था, वह स्वयं में सामंजस्यपूर्ण प्रेम के साथ स्वयं से समागम करता था।
और उसने ही आकाश और पृथ्वी को रचा।

उत्पत्ति 1:1-2

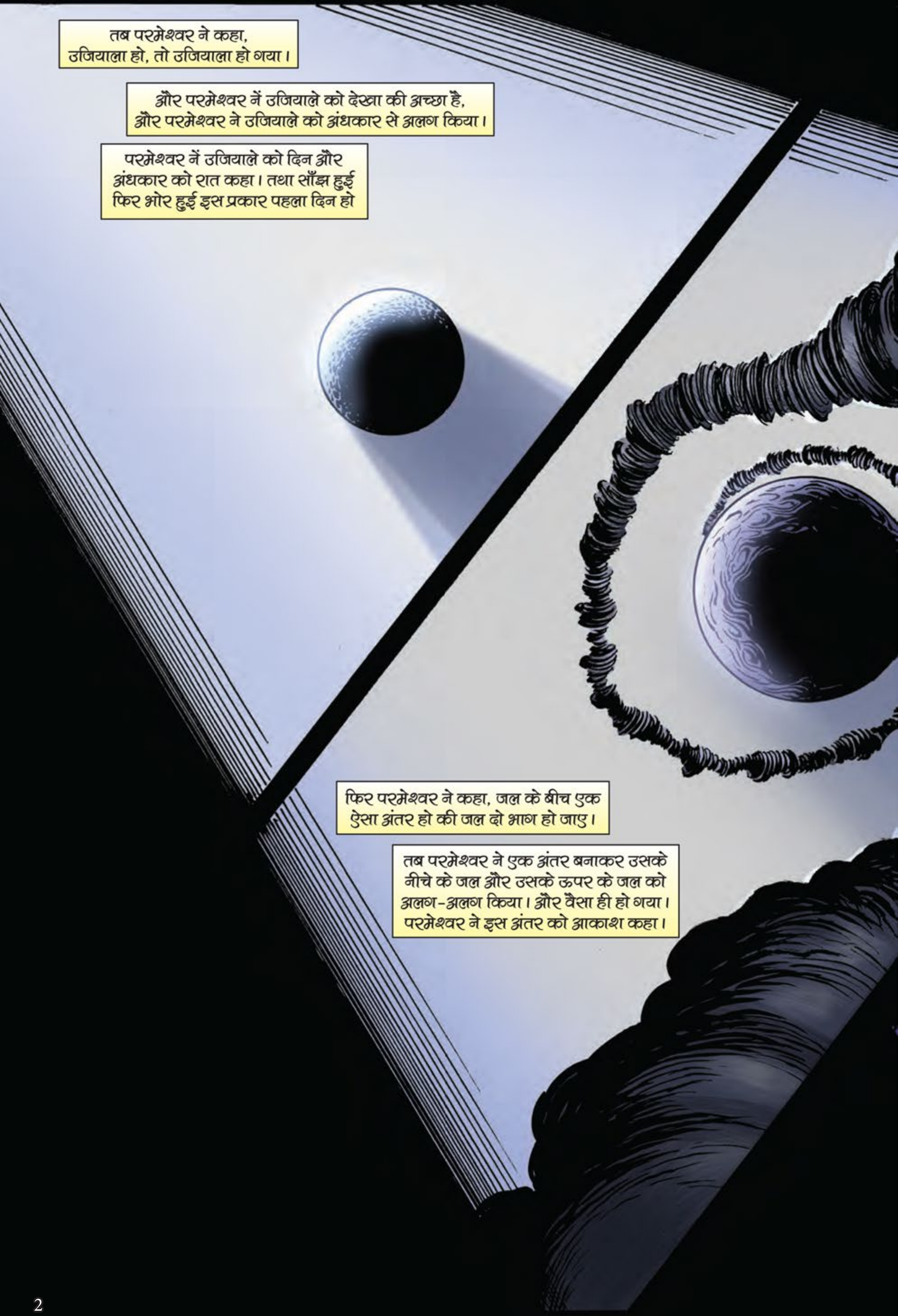
तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो, तो उजियाला हो गया।
और परमेश्वर नें उजियाले को देखा की अच्छा है, और परमेश्वर ने उजियाले को अंधकार से अलग किया।
परमेश्वर नें उजियाले को दिन और अंधकार को रात कहा। तथा साँझ हुई फिर भोर हुई इस प्रकार पहला दिन हो
फिर परमेश्वर ने कहा, जल के बीच एक ऐसा अंतर हो की जल दो भाग हो जाए।
तब परमेश्वर ने एक अंतर बनाकर उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग-अलग किया। और वैसा ही हो गया। परमेश्वर ने इस अंतर को आकाश कहा।

उत्पत्ति 1:3-8

फिर परमेश्वर ने कहा, आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे।
और वैसा ही हो गया परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने पृथ्वी कहा।
और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
फिर परमेश्वर नें कहा, पृथ्वी से हरी घास और छोटे-छोटे पेड़ और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक-एक की जाति के अनुसार पृथ्वी पर उगें, और वैसा ही हो गया।

इस प्रकार पृथ्वी से हरी घास और छोटे-छोटे पेड़ जिनमें अपनी-अपनी जाति के अनुसार बीज होता है ,और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक-एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं।
और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया।
उत्पत्ति 1:9-13

सृष्टी की उत्पत्ति के चोथे दिन परमेश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा और तारागणों की रचना की - एक विस्तृत जगत की।
फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अंतर में ज्योतियाँ हों, और वे चिन्हों, और नियत समयों और दिनों और वर्षो के कारण हों, और वे ज्योतियाँ आकाश के अंतर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें।
और वैसा ही हो गया। तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई उनमे से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिए और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिए बनाया और तारागण को भी बनाया।

परमेश्वर ने उनको आकाश के अंतर में इसलिए रखा कि वे पृथ्वी पर प्रकाश दें, तथा दिन और रात पर प्रभुता करें, और उजियाले को अंधियारे से अलग करें।
और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ - इस प्रकार चौथा दिन हो गया।

उत्पत्ति 1:14-19

सृष्टि के पाँचवें दिन परमेश्वर ने समुद्र को जीवित प्राणियों से भर दिया।
फिर परमेश्वर ने कहा, जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाये, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अंतर में उड़ें।
इसलिए परमेश्वर ने जाति-जाति के बड़े-बड़े जल-जन्तुवों को और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते-फिरते हैं जिनसे जल बहुत भर गया और एक-एक जाति के उड़ने वाले पक्षियों की भी सृष्टि की।

और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
परमेश्वर ने यह कहकर उनको आशीष दी, फूलो-फलो, और समुद्र के जल में भर जाओ और पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें।
तथा साँझ हुई फिर भोर हुई - इस प्रकार पाँचवां दिन हो गया।
उत्पत्ति 1:20-23

सृष्टि-सप्ताह के छठे दिन परमेश्वर ने भूमि पर रहने वाले प्राणियों को बनाया।
फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक-एक जाति के जीवित प्राणी अर्थात घरेलु पशु और रेंगनेवाले जन्तु और पृथ्वी के वन पशु, जाति-जाति के अनुसार उत्पन्न हों।

और वैसा ही हो गया।
इस प्रकार परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति-जाति के वन पशुओं को और जाति-जाति के घरेलु पशुओं और भिन्न-भिन्न प्रकार के सब रेंगने वाले जन्तुओं को बनाया।
और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
उत्पत्ति 1:24-25

छठे दिन परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से एक नए प्राणी की रचना की।
परमेश्वर ने मिट्टी के शरीर में जीवन का श्वास फूँक दिया और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया, और वह सभी प्राणियों से ऊँचा, परमेश्वर के स्वरुप के अनुसार बनाया गया।
परमेश्वर ने इस नये प्राणी को मनुष्य कहा और उसे आदम नाम दिया।
परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा और कहा, यह बहुत अच्छा है।

तब परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन में एक वाटिका लगाई।
और वहाँ उसने मनुष्य को जिसे उसने रचा था रख दिया।
वाटिका के वृक्ष देखने में मनोहर और उनके फल खाने में अच्छे थे।
पृथ्वी से कुहरा उठता था जिस से भूमि की सारी सतह सिंच जाती थी और उस वाटिका से एक नदी निकलती थी।
परमेश्वर ने मनुष्य को रचा और उसने मनुष्य को करने के लिए एक काम दिया कि - वाटिका की देखभाल करे।

वाटिका के बीच में दो वृक्ष लगे थे। एक वृक्ष जीवन का वृक्ष था जो अनन्त जीवन प्रदान करने वाला था। और एक वृक्ष भले या बुरे के ज्ञान का वृक्ष था।
परमेश्वर ने मनुष्य को यह आज्ञा दी कि वह वाटिका के सभी वृक्षों के फल खा सकता है - पर साथ ही एक गम्भीर चेतावनी भी दी...

तू भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल कभी न खाना क्योंकि जिस दिन तू उस में से खायेगा उसी दिन अवश्य मर जायगा।
उत्पत्ति 2:9, 15-17

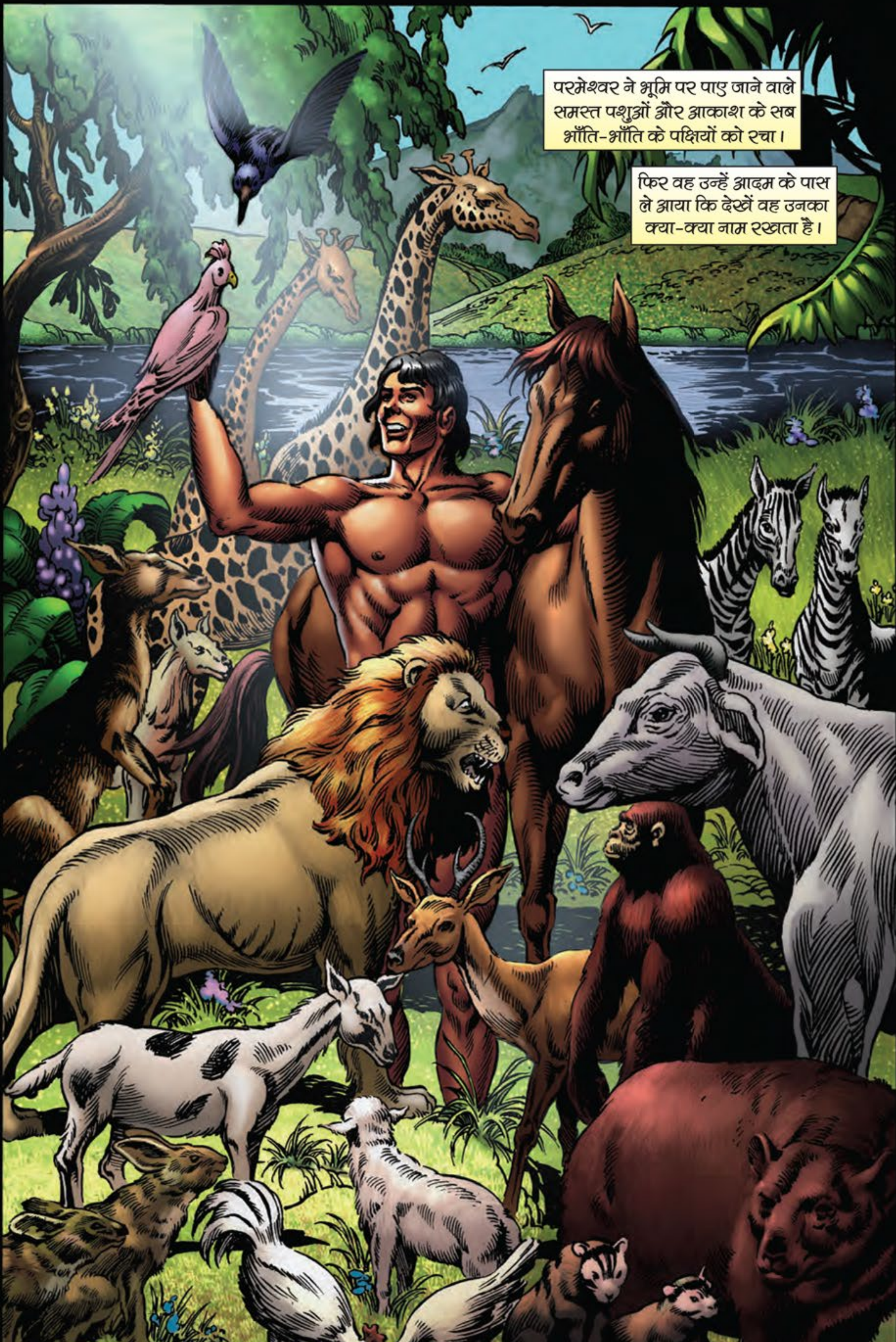
परमेश्वर ने भूमि पर पाए जाने वाले समस्त पशुओं और आकाश के सब भाँति-भाँति के पक्षियों को रचा।
फिर वह उन्हें आदम के पास ले आया कि देखें वह उनका क्या-क्या नाम रखता है।

उत्पत्ति 2:19-20

प्रत्येक दिन आदम परमेश्वर से बातचीत करता था और परमेश्वर की संगति का आनन्द उठाया करता था।
परन्तु जब आदम ने प्राणी-युग्मों को देखा तो उसे वह अनुभूति हुई कि उसके संग कोई उपयुक्त साथी नहीं है।
परमेश्वर ने आदम की इस इच्छा को देखा और यह जान लिया कि उसका अकेला रहना अच्छा नहीं है।
तब परमेश्वर ने सृष्टि की अपनी योजना के अगले चरण को प्रगट किया।
परमेश्वर ने आदम को गहरी निद्रा में डाल दिया, और जब वह गहरी नींद में था, परमेश्वर ने उसकी एक पसली निकाल ली।
और इस पसली से परमेश्वर ने प्रथम नारी का सृजन किया।

और परमेश्वर इस स्त्री को आदम के पास ले आया।
और यह स्त्री उसके लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त साथी थी।
आदम ने अपनी सुंदर पत्नी का नाम हव्वा रखा।

परमेश्वर स्त्री को आदम की पास लाया और इस प्रकार परमेश्वर ने सृष्टि के प्रथम विवाह को संपन्न किया।
और आदम स्त्री के सुंदर रूप में परमेश्वर द्वारा प्रदान किये इस अवर्णनीय उपहार से अत्यधिक प्रसन्न था।

गिराये गये स्वर्गदूतों में से एक शैतान, परमेश्वर की महान योजना को नष्ट करने की कोशिश में लग गया।
वह परमेश्वर के सुन्दर कार्य को नष्ट करने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में रहने लगा।
अतः वह वाटिका में सर्प द्वारा प्रवेश कर हव्वा से बातें करने लगा।
सब से पहले उसने परमेश्वर के कथन पर प्रश्न चिन्ह लगाने की चेष्टा प्रारंभ कर दी।
उसने कहा, क्या यह सत्य है कि परमेश्वर ने कहा - तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?
हव्वा इस बात से पूरी तरह अवगत थी कि परमेश्वर ने उनसे क्या कहा हैं और उनसे इस बात को सर्प के सामने दोहरा दिया।
इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते है, पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है की न तो तू उसको खाना न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।

तब शैतान ने पूरी तरह से झूठ का सहारा लेते हुए हव्वा को परमेश्वर के ईश्वरत्व और स्वरूप पर संदेह करने के लिए उकसाने का निश्चय किया।
तुम नहीं मरोगी।
परमेश्वर स्वयं जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जायेंगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।
यह फल खाने के लिए अच्छाऔर देखने में मनोहर है।
साथ ही इस से ज्ञान प्राप्त हो सकता है...
देखो, मैंने इसे खाया और नहीं मरी, तुम भी थोड़ा खाओ और तुम भी ज्ञान से परिपूर्ण हो जाओगे।

उत्पत्ति 3:4-6

यह मैंने क्या कर डाला?
ओह नहीं!
और उसी क्षण से आदम और हव्वा ने प्रथम बार लज्जा का अनुभव किया - परमेश्वर की प्रेमपूर्ण आज्ञा का उलंघन करने का पाप।
मैंने ऐसा अनुभव कभी नहीं किया!
मैं स्वयं को बुरा और शर्मिन्दा महसुस कर रही हूँ।
आदम और हव्वा अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़ कर स्वयं को और अपनी नग्नता को ढकने का प्रयास करने लगे।
जब वाटिका में दिन के ढण्डे समय उन्हें परमेश्वर के चलने-फिरने का शब्द सुनाई दिया तो वह भाग कर वृक्षों के बीच से छुप गए।

किसने तुझे कहा कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैंने तुझे मना किया था, क्या तूने उसका फल खाया है?
मैं तेरा शब्द वाटिका में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नंगा था इसलिए छिप गया।
जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया और मैंने खाया।
तूने यह क्या किया ?
सर्प ने मुझे बहका दिया, उसने कहा कि मैं नहीं मरूँगी और तेरे तुल्य हो जाऊँगी।
उसने मुझसे झूठ बोला...
तूने यह जो किया है इस कारण तू समस्त पशुओं से अधिक श्रापित है, तू पेट के बल चला करेगा और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा।
मैं तेरे और इस स्त्री के बीच बैर उत्पन्न करूँगा।
मैं तेरे और स्त्री के वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा।
वह तेरे सर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा।
परमेश्वर चाहता तो शैतान और उसके दूतों का नाश कर सकता था पर उसने उन्हें रहने दिया ताकि उनसे मानव जाति को परख सके कि कौन परमेश्वर का अनुसरण करता है और कौन उसके विद्रोह में शैतान का अनुसरण करता है।
यही परमेश्वर एक वायदा करता है कि भविष्य में होने वाली एक लड़ाई में इस स्त्री के वंश में से एक शैतान को पराजित करेगा और मानव जाति को पाप के श्राप और मृत्यु से छुटकारा दिलाएगा।

उत्पत्ति 3:8–15

पाप का अभिशाप अब मानव जाति में क्रियाशील और जीवंत हो उठा था।
मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने से दुःख को अत्यधिक बढ़ाऊँगा और तू अतिवेदना सहकर संतान उत्पन्न करेगी।
फिर भी तेरी लालसा तेरे पति के लिए होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।
क्योंकि तू ने अपनी पत्नी की बात मानकर उस वृक्ष का फल खाया जिसके लिए मैंने आज्ञा देकर कहा था कि तू उसमें से न खाना, इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है।
तू उसकी उपज जीवन भर कठिन परिश्रम के साथ खाया करेगा।
वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी...
तू अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिटटी में मिल जाएगा, क्योंकि तू उसी में से निकाला
तू मिट्टी तो है, अतः मिट्टी में फिर मिल जाएगा।
मानव इतिहास में पहली बार लहू तब बहाया गया जब परमेश्वर ने दो पशुओं को घात कर मनुष्य के शरीर को ढाँपने के लिए उनके चमड़े को लिया।
यह इस बात का सजीव उदाहारण है कि केवल परमेश्वर ही हमारे पापों को ढाँप सकता है और लहू का बहाया जाना इस प्रक्रिया का अनिवार्य अंग है।
यहाँ बाइबल हमें परमेश्वर के दिव्य त्रिएक रूप, की झलक दिखलाती है - जहाँ परमेश्वर त्रिएकत्व में यह परिचर्चा करता है कि आगे क्या किया जायगा।
अब मानव भले और बुरे का ज्ञान प्राप्त कर हम में से एक के सामान हो गया है।
अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष में से भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे।

इसलिए पमेश्वर ने उनको अदन की वाटिका से निकाल दिया।
परमेश्वर यह नहीं चाहता था कि वे सदा के लिए इस पापपूर्ण स्थिति में पड़े रहें।
वाटिका से उन्हें निकालने के बाद परमेश्वर ने जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिए एक स्वर्गदूत को ज्वालामय तलवार के साथ नियुक्त कर दिया।

परमेश्वर की आज्ञा उलंघन ने अनेक दुःखदाई परिणामों को जन्म दिया।
उत्पत्ति 3:23-24

अदन की वाटिका से निकल जाने के बाद आदम और हव्वा को उनकी प्रथम संतान कैन की प्राप्ति हुई।
तत्पश्चात, उनका दूसरा पुत्र हाबिल उत्पन्न हुआ।
फिर आदम और हव्वा से अन्य पुत्र-पुत्रियाँ भी उत्पन्न हुए, बड़े होने के पश्चात् उन्होंने भी अपने परिवार बनाये।
आदम और हव्वा परमेश्वर की प्रथम रचना के रूप में अनुवांशिक रूप से परिपूर्ण थे, परिणामस्वरुप प्रारंभिक पीढ़ियों की आयु सैकड़ों वर्षो की रही।
आरंभ में परिवार के सदस्य घनिष्ठ सम्बन्धियों में विवाह करते थे। और विकारउत्पन्न करने वाले उत्परिवर्ती जीन तब तक वंश वाहिकाओं में नहीं आये थे।
(बाद में परमेश्वर ने मूसा के द्वारा धनिष्ठ सम्बन्धियों में विवाह को निषेध कर दिया।)
साथ ही, जल प्रलय के पूर्व का वातावरण, जल-आवरण पृथ्वी को परा-बैंगनी किरणों से सुरक्षित रखता था। इस प्रकार वातावरण अधिक स्वास्थ्य-वर्धक था।
इस अदूषित अनुवांशिकता और लम्बी जीवन अवधि के कारण जनसंख्या का विस्तार से तेजी से हुआ।

कैन और हाबिल वयस्क हो गये। कैन भूमि पर खेती करने वाला किसान बना।
छोटे पुत्र हाबिल को चरवाहा बनना रास आया।
परमेश्वर ने दंपतीयों और उनकी संतानों पर यह प्रगट किया कि पाप की गंभीरता एवं विकटता को स्मरण दिलाने के लिए किस प्रकार बलिदान चढ़ाया जाए।
यद्यपि, पशुपालक और किसान होना ही प्रतिष्ठित व्यवसाय था, कैन और हाबिल ने परमेश्वर के समक्ष अपनी भेंट अलग-अलग रीती से चढ़ाई।
हाबिल अपनी भेड़-बकरियों के पहिलौटे से भेंट चढ़ाने ले आया, उसने हृदय से अपना सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर को समर्पित किया।
और यह उसी रीती से किया गया था जैसे परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया था।
इसके विपरीत कैन ने अपनी इच्छा से उपज का कुछ हिस्सा भेंट चढ़ाया।
परमेश्वर ने हाबिल पर अनुग्रह किया और उसकी भेंट ग्रहण की, किन्तु कैन की भेंट ग्रहण नहीं की गई।

तू क्रोधित क्यों है ?
तेरे मुँह पर उदासी क्यों छा गई है ?
यदि तू भला करे तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी ?
और यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर छिपा बैठा रहता है।
उसकी अभिलाषा तुझे प्राप्त के लेने की होगी, परन्तु तुझे उस पर प्रभुता करनी है।
किन्तु कैन ने परमेश्वर के वचन को सुनना नहीं चाहा।
मेरे भाई, आओ देखो परमेश्वर ने किस प्रकार मेरी नई फसल को आशीषित किया है।
पर भाई, ये...

उत्पत्ति 4:6-8

परन्तु परमेश्वर की दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं रहता, हम जो कुछ भी करते है वह उसे जनता और देखता है।
परमेश्वर कैन के पास आया और उसने उससे प्रश्न करते हुए कहा...
तेरा भाई हाबिल कहाँ है?
मुझे क्या मालूम - क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?
तू ने क्या किया है?
सुन, तेरे भाई का लहू भूमि से चिल्लाकर मेरी दुहाई दे रहा हैं।
अब भूमि जिसने तेरे भाई का लहू तेरे हाथ से पीने के लिए अपना मुँह खोला है उसकी और से तू शापित है।
जब तू भूमि पर खेती करेगा, उसकी पूरी उपज तुझे नहीं मिलेगी।
कैन जिसे खेती करना भला लगता था, अब भगोड़ा और भटकने वाला बन गाया था।
मेरा दण्ड सहने से बाहर है। आज के दिन तूने मुझे भूमि पर से निकला है और में तेरी दृष्टि से छिपा रहूँगा...
...मैं पृथ्वी पर ईधर-उधर भटकने वाला भगोड़ा रहूँगा और जो कोई मुझे पाएगा मुझे धात करेगा।
नहीं ऐसा न होगा, जो कोई तुझे धात करेगा उससे सात गुणा बदला लिया जाएगा।
तब कैन परमेश्वर के सम्मुख से निकल गया और अदन के पूर्व की ओर रहने लगा।

उत्पत्ति 4:9-16

कैन की पत्नी गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम हनोक था।
आअआहहह !
कैन ने एक नगर बसाया और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रखा।
कैन की संतानों ने विभिन्न प्रकार के व्यवसायों को अपनाया और वे उन व्यवसायों के प्रवर्तक हुए...
कुछ तम्बुओं में रहने और पशुपालन करने लगे।
कुछ विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रों को बनाने वाले और बजाने वाले हुए।
धातुविद्या का आविर्भाव हो गया था और कैन वंश जो ने लोहे और पीतल से औजारों को गढने की कला सीख ली थी।

आदम और हव्वा को परमेश्वर ने उनके घात किये गए पुत्र के स्थान पर फिर एक पुत्र दिया जिसका नाम शेत रखा गया।

शेत के वंश में से ही जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार एक छुटकारा देने वाला मसीह आने वाला था।

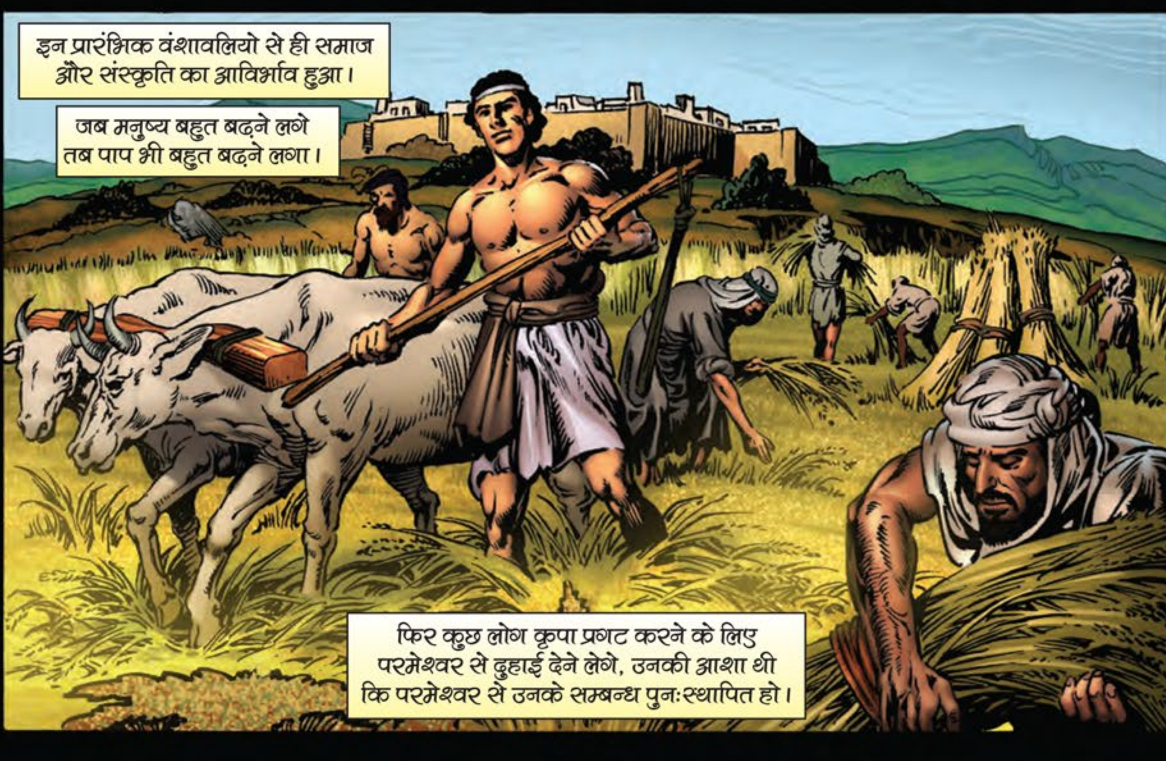
इन प्रारंभिक वंशावलियो से ही समाज और संस्कृति का आविर्भाव हुआ।
जब मनुष्य बहुत बढ़ने लगे तब पाप भी बहुत बढ़ने लगा।
फिर कुछ लोग कृपा प्रगट करने के लिए परमेश्वर से दुहाई देने लगे, उनकी आशा थी कि परमेश्वर से उनके सम्बन्ध पुनःस्थापित हो।

किन्तु अधिकांश लोग हिंसक और उग्र होते गए और उनमें अनैतिकता बढ़ती गई।
जिन धातुओं से औजार बनाए जाते थे उनसे हथियार बनाए जाने लगे जिससे उनके द्वारा हत्या और हिसांत्मक कार्य किये जा सकें।
उनके मन के विचार बुराई से भरे हुए थे और उनमें कोई धार्मिकता नहीं थी।
मनुष्यों ने दूसरे मनुष्यों को अपना दास बनाया।
आदम ने तो एक पाप किया था किन्तु उसके वंशजो के पाप अनेक थे।
परमेश्वर अत्यन्त खेदित हुआ कि उसने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया और उसका हृदय दुःख से भर गया।
परमेश्वर जो पवित्र एवं निष्कलंक है पृथ्वी पर बुराई के भर जाने से बहुत शोकित हुआ।
उसने मनुष्य और पशु और जो कुछ भी उसने सृजा था, उन सबको पृथ्वी पर से मिटा डालने की योजना बनाई।
परन्तु एक मनुष्य पर परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टी बनी रही।

"THE BIBLE EXPLAINED IN EVERY LANGUAGE."

SUPERBIBLE.TV